Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

मैराथन क्लास

MCQ + गद्यांश +पद्यांश+ संस्कृत+

व्याकरण +पत्र लेखन + निबंध

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

1.निम्नलिखित कथनों में से कोई एक कथन सत्य है ,पहचान कर

(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक प्रख्यात नाटककार है।

(ख) रामविलाश शर्मा उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

(ग) 'क्या भूँलूँ क्या याद करूँ' कहानी विधा की रचना है।

(घ) 'अजन्ता' के लेखक डॉ भगवत शरण उपाध्याय हैं।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

2. 'त्यागपत्र' के लेखक का नाम है–

(क) जैनेन्द्र कुमार
(ख) मुंशी प्रेमचंद्र
(ग) जयशंकर प्रसाद
(घ) अमृतलाल नागर

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

3. उसने कहा था' किस विधा की रचना है–

(क) उपन्यास
(ख) यात्रावृत्त
(ग) कहानी
(घ) आलोचना

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

4. निम्नलिखित कथनों में से कोई एक कथन सही पहचान कर लिखिए–

(क) 'विचारवीथी' आचार्य शुक्ल का ग्रन्थ है।

(ख) 'उजली आग' यशपाल का निबन्ध संग्रह है।

(ग) 'डॉ. नगेन्द्र प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं।

(घ) रामश्वरूप चतुर्वेदी सफल इतिहास लेखक हैं।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

5. 'जहाज का पंछी' किसकी कृति है?

(क) जयशंकर प्रसाद
(ख) फणीश्वरनाथ 'रेणु'
(ग) इलाचन्द्र जोशी,
(घ) भगवतीचरण वर्मा।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

6. ‘कलम का सिपाही’ के रचनाकार हैं–

(क) प्रेमचन्द्र
(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(ग) अमृतराय
(घ) हरिवंशराय ‘बच्चन’

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

7. 'प्रबन्ध पारिजात' के रचनाकार हैं.

(क) रामचन्द्र शुल

(ख) किशोरी लाल गोस्वामी

(ग) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(घ) भगवतीचरण वर्मा

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

8. 'चिन्तामणि' के लेखक का नाम है–

(क) जयशंकर प्रसाद
(ख) रामचन्द्र शुक्ल
(ग) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
(घ) मुंशी प्रेमचन्द

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

9. 'ग्यारह वर्ष का समय' किसकी कृति है–

(क) अमृतलाल नागर

(ख) जैनेन्द्र कुमार

(ग) रामचन्द्र शुक्ल

(घ) जयशंकर प्रसाद

10. 'गोदान' किसकी रचना है-

(क) महादेवी वर्मा

(ख) मुंशी प्रेमचन्द

(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी

(घ) जयशंकर प्रसाद

वाक्य का स्वरूप

परिभाषा-

दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अ
निकलता हो उसे वाक्य कहते हैं।

वाक्य के अंग

प्रत्येक वाक्य के मुख्य दो अंग होते हैं-

1. **उद्देश्य** -वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए उद्देश्य कहत
है। वाक्य का कर्त्ता ही वाक्य का उद्देश्य होता है। कर्त्ता के वि
भी उद्देश्य के अंतर्गत आते हैं।

2.**विधेय-** वाक्य में कर्त्ता के बारे में जो कुछ कहा जाए विधेय क
है। कर्म, कर्म के विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण आदि वि
अंतर्गत आते हैं।

उदाहरण– प्रशिक्षक खेलते हैं। (यहाँ 'प्रशिक्षक' उद्देश्य है तथा 'खेलते है
विधेय है)

वाक्य के भेद एवं प्रकार

वाक्य के भेद दो आधार पर किए जा सकते हैं-

1.अर्थ के आधार पर

2.रचना के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर 8 प्रकार के वाक्य होते हैं-

1. विधान वाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. प्रश्नवाचक वाक्य
4. विस्म्यादिवाचक वाक्य

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

5. आज्ञावाचक वाक्य
6. इच्छावाचक वाक्य
7. संकेतवाचक वाक्य
8. संदेहवाचक वाक्य

रचना के आधार पर

(3 प्रकार)

१- सरल वाक्य/साधारण वाक्य- जिन वाक्यों मे एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं, इन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है।

- ☞ रजत पुस्तक पढ़ता है।
- ☞ तरुण मुंबई जा रहा है।
- ☞ कालू भागता रहता है।

२- संयुक्त वाक्य- दो अथवा दो से अधिक साधारण वाक्य जब समानाधिकरण समुच्चयबोधकों जैसे-(पर, किन्तु, और, या आदि) से जुड़े होते हैं, तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

पहचान- और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिरभी, तो, नही तो, लेकिन, किन्तु, परन्तु, पर आदि योजक शब्द आयें तो संयुक्त वाक्य होगा।

☞रात खत्म हुई और उजाला होने लगा।

☞राम ने बहुत मेहनत की लेकिन परीक्षा में सफल नहीं हुआ।

☞वह बहुत तेज दौड़ा फिर भी बस को नहीं पकड़ पाया।

३. मिश्रित/मिश्र वाक्य- जिन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान वाक्य हो और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं।

पहचान- अन्य उपवाक्य आपस में कि, जो, क्योंकि, जैसा-वैसा, जितना-उतना, जब- तब, जहाँ-वहाँ, जिधर-उधर, अगर/यदि, तो, यद्यपि-तथापि आदि से मिश्रित हों तो वहाँ मिश्र वाक्य होगा।

☞यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे।

☞मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते।

वाच्य के प्रकार

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

कर्त्तृवाच्य —जिस वाक्य में क्रिया का सम्बंध कर्ता से होता है वह कर्त्तृवाच्य कहलाता है। अर्थात कर्त्ता के सम्बन्ध में बोध करानेवाला

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

दूसरे शब्दों में जब वाक्य में क्रिया के लिंग, पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं तो उसको कर्त्तृवाच्य कहते हैं।

उदाहरण– गीता पत्र लिखती है।

कर्मवाच्य— जिस वाक्य में क्रिया का सम्बंध कर्म से होता है वह कर्मवाच्य कहलाता है। अर्थात कर्म का बोध करनो वाला

उदाहरण– गीता–द्वारा पत्र लिखा जाता है।

दूसरे शब्दों में जब वाक्य में क्रिया कर्म के लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार होती है तो वाक्य कर्मवाच्य में होता है।

भाववाच्य— (जिस वाक्य में क्रिया का सम्बंध भाव से होता है वह भाववाच्य कहलाता है। ऐसे वाक्य केवल

अकर्मक क्रिया में होते हैं अर्थात भाव की प्रधानता का बोध करने वाला

दूसरे शब्दों में जब वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्त्ता और कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होता है तो उसे भाववाच्य कहते है।

उदाहरण- गीता से पत्र लिखा नहीं जाता।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

पद-परिचय

परिभाषा- जिस प्रकार हम अपना परिचय देते हैं, ठीक उसी प्रकार एक वाक्य में जितने शब्द होते हैं, उनका भी परिचय हुआ करता है। वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक सार्थक शब्द को पद कहते है तथा उन शब्दों के व्याकरणिक परिचय को पद-परिचय, पद-व्याख्या या पदान्वय कहते है।

विकारी शब्द

परिभाषा- जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन और कारक के कारण परिवर्तन हो जाता है विकारी शब्द कहलाते हैं। अर्थात जिनमें विकार या परिवर्तन आ जाए, जो बाहरी प्रभाव से बदल जाते है विकारी शब्द होते है।

उदाहरण- बूढ़ा से बुढ़ापा, बुढ़िया

विकारी शब्द के प्रकार

विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–

1. संज्ञा- किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

जैसे–मानव दिल्ली में रहता है।

2. सर्वनाम- संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- तुम, हम, वह।

3. क्रिया- जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे- पढ़ना, जाना, बैठना

4. विशेषण- संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

जैसे- बुद्धिमान, गोरा, मूर्ख।

अविकारी शब्द (अव्यय)

परिभाषा- जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन और कारक आदि के कारण परिवर्तित नहीं होते हैं, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

अविकारी शब्द अपरिवर्तनीय शब्द हैं। ऐसे शब्द जिनमें कोई भी बदलाव नहीं आता और जो प्रत्येक दशा में एक जैसे रहते हैं, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

उदाहरण- घोड़ा धीरे-धीरे चलता है।

रमा धीरे-धीरे चलती है।

धीरे-धीरे शब्द क्रियाविशेषण है और इसको धीरू-धीरू या धीरा-धीरा नहीं लिखा जा सकता। ये शब्द किसी भी लिंग या वचन में आएँ, एक जैसे रहेंगे। इनमें परिवर्तन नहीं हो सकता।

अविकारी शब्द के प्रकार

ये शब्द भी चार प्रकार के होते हैं।

1. **क्रियाविशेषण–** जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे- वह धीरे-धीरे चलता है, इसमें तेज, धीरे-धीरे जल्दी जल्दी क्रिया-विशेषण हैं।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

2. संबन्धबोधक– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से संबंध स्पष्ट करें, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

जैसे– सीता राम के बिना नहीं रह सकती।

3. समुच्चयबोधक– दो शब्दों, वायांशों या वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले, अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे– वह गरीब है किन्तु ईमानदार है।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

4. **विस्मयादिबोधक-** जो अव्यय, हर्ष, घृणा, शाक, भय, आश्चर्य आदि मनोभावों को व्यक्त करते हैं, उसे विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं। इसका संबंध वाक्य के किसी भी पद से नहीं होता है।

जैसे- हाय! अब वह नही रहा।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

गद्यांश

सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा। अथवा तुम्हारे चरित्र - बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकनेवाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता है कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है! तुम्हारा विवेक

कुंठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो।

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'मित्रता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न- (iii)रेखांकित अंशों की व्याख्या- जब मनुष्य किसी बुराई की ओर एक कदम बढ़ा देता है और वह उस बुराई को एक बार अपना लेता है तो वह फिर

Gyansindhu Coaching Classes Join – Whatsapp Channel By Link Subscribe for Live Class

यह सोचना छोड़ देता है कि वह जिस बुराई की ओर बढ़ रहा है, उससे उसके चरित्र पर कितना बड़ा कलंक लग सकता है, इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और चरित्र का कितना पतन हो सकता है। धीरे-धीरे व्यक्ति बुराइयों का आदी हो जाता है। इस प्रकार बुराई के प्रति व्यक्ति के मन में स्थित घृणा कम होती जाती है।

जब हमारी उचित-अनुचित का निर्णय करनेवाली विवेक-शक्ति समाप्त होती जाती है और हमें भले-बुरे की कोई पहचान नहीं रह जाती। इसके परिणामस्वरूप अन्त में व्यक्ति बुराई का भक्त होकर उसमें लिप्त हो जाता है और उससे उसे

कोई चिढ़ अथवा घृणा भी नहीं होती। इसलिए स्वयं को बुराई से बचाए रखने का एकमात्र उपाय यही है कि व्यक्ति को बुरी संगति से बचना चाहिए।

प्रश्न- (iv)लेखक यहाँ किस बात के प्रति सावधान रहने को कहता है?

उत्तर- लेखक उन लोगों के प्रति सावधान रहने को कहता है, जो फूहड़, अश्लील और अपवित्र बातें करते हैं और इन बातों से हमें हँसाना चाहते हैं।

प्रश्न- (v)'कीचड़ में पैर डालने'से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'कीचड़ में पैर डालने से तात्पर्य बुराई में प्रवेश करने से है।

प्रश्न- (vi)बुरे लोगों से कब हमारी घृणा कम हो जाएगी?

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

उत्तर- जब हम निरन्तर बुरे लोगों के सम्पर्क में रहते हैं तो हम उनकी बुरी बातों के अभ्यस्त हो जाते हैं, तब उन लोगों के प्रति हमारी घृणा कम हो जाती है।

प्रश्न- (vii)बुरी संगति से व्यक्ति को क्या हानि होती है?

उत्तर- बुरी संगति से व्यक्ति का विवेक कुण्ठित हो जाता और उसे भले- की पहचान नहीं रह जाती।

प्रश्न- (viii) लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में क्या सन्देश दिया?

उत्तर- लेखक ने हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का उपाय बुरी संगत की छूत से बचना सुझाया है।

प्रश्न- (viii) मनुष्य में भले-बुरे की पहचान करने की शक्ति कब आती है?

उत्तर- विवेक उत्पन्न होने पर मनुष्य में भले-बुरे की पहचान करने की शक्ति आती है।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

पद्यांश

अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम- अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै।

काव्यगत सौंदर्य- रस-शांत, छन्द-गेय पद, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-ब्रज, गुण

1. 'अबिगत' का क्या अर्थ है?

उत्तर- नित्य (ईश्वर)

2. मन और वचन से कौन अगम व अगोचर है?

उत्तर-निर्गुण निराकार ब्रह्म

3. सूर सगुण पद का गायन क्यूँ करने लगते हैं?

उत्तर- निर्गुण निराकार ब्रह्म सब प्रकार से अगम्य व अगोचर है। ऐसा सोच कर सूर सगुण पद का गायन करते हैं।

4. रूप, रेखा, जाति और युक्तिहीन किसे कहा गया है?

उत्तर- निर्गुण निराकार ब्रह्म को।

5. प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर प्रस्तुत पद्यांश महाकवि 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' से लिया गया है, जो हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'काव्य-खण्ड' में 'पद' नामक शीर्षक से संकलित है।

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

संस्कृत प्रश्नोत्तर

1. वाराणसी नगरी कस्याः नद्याः कूले स्थिता? / कुत्र स्थिता अस्ति?

उत्तरः वाराणसी गङ्गायाः नद्याः कूले स्थिता।

2. वैदेशिकाः पर्यटकाः कस्याः शोभाम् अवलोक्य वाराणसी प्रशंसन्ति?

अथवा कस्याः शोभाम् अवलोक्य वैदेशिकाः पर्यटकाः वाराणसी बहुप्रशंसन्ति?

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर: गङ्गाया: शोभाम् अवलोक्य वैदेशिका: पर्यटका: वाराणसी प्रशंसन्ति।

3. वाराणसी कस्या: भाषाया: केन्द्रम् अस्ति?

अथवा वाराणसी कस्य केन्द्रस्थलम्/ केन्द्रस्थली अस्ति?

उत्तर: वाराणसी संस्कृतभाषाया: केन्द्रस्थलम् अस्ति।

4. वाराणस्यां कियन्त: विश्वविद्यालया: सन्ति?

अथवा वाराणस्यां कति विश्वविद्यालया: सन्ति?

उत्तर: वाराणस्यां त्रय: विश्वविद्यालया: सन्ति।

5. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते?

उत्तरः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः वाराणस्यां नगर्यां विद्यते।

6. वाराणसी नगरी केषां / कस्य सङ्गमस्थली अस्ति?

उत्तरः वाराणसी नगरी विविधर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति।

7. कोहः कुत्र गत्वा भारतीय दर्शन शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्?

अथवा दाराशिकोहः वाराणसीम् आगत्य किमकरोत्?

उत्तरः दाराशिकोहः वाराणसीं गत्वा भारतीय - शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

8. दाराशिकोहः कस्यां भाषायाम् उपनिषदाम् अनुवादम् अकारयत्?

उत्तर: दाराशिकोहः पारसीभाषायाम् उपनिषदाम् अनुवादम् अकारयत्।

9. संस्कृतविश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते?

उत्तर: संस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसी नगर्यां विद्यते।

10. वाराणसी किमर्थं प्रसिद्धा?

उत्तर: वाराणसी विद्या - दर्शन - साहित्य - धर्म - कला- -शिल्पार्थं प्रसिद्धा अस्ति।

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

पत्र लेखन

अपनी (अनुजा) छोटी बहन को समय के सदुपयोग की सलाह देते हुए सरल भाषा में एक पत्र लिखिए।

416/45 , नयागाँव,

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

रामपुर, उ०प्र० ।

दिनांक – 10-07-2023

प्रिय अनुजा, शुभाशीष।

आशा करता हूँ कि तुम सकुशल छात्रावास में रह रही होंगी। तुम्हारा मन वहां लग गया होगा। यह भी आशा करता हूँ कि तुम्हारी दिनचर्या नियमित चल रही होगी। तुम अत्यन्त होनहार लड़की हो तुम्हें छात्रावास में रहकर अपना जीवन संवारने का अवसर प्राप्त हुआ है। बड़ा भाई होने के नाते मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि तुम समय का खूब सदुपयोग करना। अपनी दिनचर्या इस प्रकार बनाना कि पढ़ाई को सर्वाधिक महत्त्व मिले। जीवन में यह सुनहरा अवसर फिर वापस नहीं आएगा। इसलिए समय का एक-एक क्षण पढाई में लगाना। मनोरंजन एवं व्यर्थ की बातों में ज्यादा समय व्यतीत न करना। खेल-कूद को भी पढ़ाई जितना ही महत्त्व देना।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

आशा करता हूँ तुम मेरी बातों को समझकर अपने समय का उचित प्रकार सदुपयोग करोगी तथा अपनी दिनचर्या का उचित प्रकार पालन करके परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करोगी।

शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा ज्येष्ठ भ्राता

पंकज

अनुशासन का महत्व

रूपरेखा

- प्रस्तावना

- अनुशासन से अभिप्राय
- अनुशासन के प्रकार
- छात्र जीवन में अनुशासन
- अनिवार्य सैनिक शिक्षा और अनुशासन
- नैतिक शिक्षा और अनुशासन
- उपसंहार

प्रस्तावना —कोई भी मनुष्य समाज में ही से रहकर जीवन व्यतीत करता है। नियमित जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य को अनुशासन में रहना अत्यन्त

आवश्यक है। किसी भी राष्ट्र के नागरिकों के लिए प्रथम एवं मुख्य कर्त्तव्य यह हो जाता है कि वे अनुशासन में रहें। जिस देश के नागरिक अनुशासन का पालन करते हैं, वह देश निश्चय ही महान् और शक्तिशाली होगा। अतः छात्र जीवन व राष्ट्रीय जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है।

अनुशासन से अभिप्राय—'अनुशासन'का अर्थ है–'नियमों की सीमाओं में बद्ध होकर कार्य करना'। इसी कारण कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि नियमों का

पालन ही **'अनुशासन'**है। अनुशासन शब्द से अभिप्राय सुव्यवस्था और नियमितता से लिया जाता है। मानव जीवन के प्रत्येक पहलू में अनुशासन का महत्त्व है। युद्ध में सेना अनुशासन के अभाव में सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। कक्षा में अध्यापक अनुशासन के अभाव में शिक्षा प्रदान नहीं कर सकता। इस प्रकार प्रत्येक कार्य को पूर्ण और सफल बनाने के लिए अनुशासन अत्यन्त आवश्यक है।

अनुशासन के प्रकार — मनुष्य के लिए अनुशासन के दो प्रकार होते हैं। एक तो आन्तरिक अनुशासन और दूसरा बाह्यअनुशासन। आन्तरिक अनुशासन से

आशय, मनुष्य के लिए अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने से है। इसके अतिरिक्त बाह्य अनुशासन से अभिप्राय दूसरों के साथ सभ्यता का व्यवहार करना दूसरों के अधिकारों और अपने कर्तव्यों का ध्यान रखना तथा समाज में सही और पात्रानुकूल आचरण करने से है।

छात्र जीवन में अनुशासन—छात्र के जीवन में तो अनुशासन एक अनिवार्य व शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाता हैं। यदि छात्र जीवन में किसी बालक का जीवन अनुशासित हो जाता है तो जीवन भर वह अपने कर्त्तव्य पथ से नहीं

डगमगायेगा तथा राष्ट्र के लिए भी उत्तम और श्रेष्ठ नागरिक सिद्ध होगा। परन्तु प्रायः देखने में यह आता है कि आज का विद्यार्थी उच्छृंखल हो गया है और सम्भवतः वह अनुशासन की सीमाओं में बँधना नहीं चाहता। यहाँ तक कि अध्यापक के सही मार्ग दर्शाने पर भी वह नहीं मानता और असभ्यता के स्तर तक उतर आता है। ऐसा करना अत्यन्त लज्जापूर्ण और अशोभनीय है। अतः छात्रों को अनुशासन का अनिवार्य रूप से पालन करना चाहिए जिससे वे अपना जीवन सुव्यवस्थित, संयमी और महान् बना सकें।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

अनिवार्य सैनिक शिक्षा और अनुशासन—सैनिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को अनुशासन सिखाना है। आजकल विद्यालयों में इसे अनिवार्य कर दिया है। इसे एन० सी० सी० का शिक्षण भी कहते हैं। यह स्कूल और कॉलजों के छात्र और छात्राओं को प्रदान किया जाता है।

नैतिक शिक्षा और अनुशासन— विद्यार्थी में अनुशासन, कर्त्तव्यनिष्ठा और सदाचार की प्रेरणा भरने के लिए शिक्षा प्रणाली में आधारभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। कुछ प्रदेशों की सरकारों ने स्कूली शिक्षा में नैतिक शिक्षा का

अनिवार्य विषय लागू कर दिया है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी के रहन - सहन तथा व्यवहार के लिए भी पृथक् रूप से अंक दिये जाने चाहिये।

उपसंहार — अतः स्पष्ट रूप से कह सक्ते हैं कि अनुशासनहीन व्यक्ति व अनुशासनहीन समाज असभ्य, जंगली और अनैतिक होता है। छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अनुशासनहीनता का समाप्त होना आवश्यक है। आज का

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

विद्यार्थी कल का नागरिक है। अतः राष्ट्र के भावी सुव्यवस्थित निर्माण लिए आज के बालक को अनुशासित बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को याद रखना होगा —

“हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा।

हम बदलेंगे जग बदलेगा।"